

ॐ नमः॥ श्रीस्यस्मान्नेदये नमः॥ ॥ अत्रादि॥
॥ लभगगकं न्यादानवाजिकानिदानवमुमहानि
तकाश्चनत्राजसूर्यादियद्वरुतसमस्तवृत्तका
महस्यस्मान्नेदयोवगमहं कानिथ्या॥ ॐ गिसं
केल्यथा ॥ नासिय॥ अर्थयावस्मायनंशागंल

चक्रमूलेत्यादि॥सूर्यार्ययाय॥ ॥न्यास॥ ॥
ॐदिविवनकामिनित्रयस्कायांनमः॥ॐमिषुव
धूमहस्यस्कांनीर्तुन्यायानमः॥ॐऐंसाक्वि
कामनिमधमायांवोषण॥ॐदगदिगवायूव
गधानिनीत्रनामिकायेदं॥ॐवन्दमकायि

नीकनिस्कार्येवषट्॥ॐस्यस्कार्येवषट्त्रयाय
रुट्॥ॐनिकेनाङ्गन्यासः॥ॐदिविवनकामिनि
ददयायनमः॥ॐमिषुवधूमहस्यस्कांनीगिष
सस्याह॥ॐऐंसाक्विनामनिगिषायवोषट्
ॐदगदिगवायूवगधानिनीकवयायदं॥ॐ

५
यन्दमच्छापीनीनप्रयायवषट्हा॥ॐ स्वस्त्वायेव
षड्भस्त्रायट्हा॥ ॥त्र्यम्बाय॥ॐ त्र्यम्बाय
नमः॥ॐ गिरियानमः॥ ॥ॐ हृदयादिमि
नं॥ ॥शस्त्राय॥ ॥क्षेत्राय॥ॐ नदिन
नमः॥ॐ महाकाशायनमः॥ पूर्व॥ॐ रंगिनन

मः॥ॐ गलयनमः॥दक्षिण॥ॐ वृषायनम
॥ॐ स्कन्दायनमः॥यमिभमः॥ॐ दवायनमः॥ॐ
वसुधायनमः॥उरु॥ ॥त्र्यम्बायट्हा॥ॐ गुरु
नमः॥मध्य॥ ॥ॐ शक्रायनमः॥ॐ
कीर्तननमः॥ॐ ननकायनमः॥ॐ धर्माय

नमः॥ॐ ह्रीं नाथ नमः॥ॐ वेना ह्यनमः॥ॐ स्वना
थनमः॥ ॥ आद्यादि॥ॐ आयेयनमः॥ॐ नेम
येनमः॥ॐ वायु येनमः॥ॐ लोभनेनमः॥ ॥
ॐ पूर्व नमः॥ॐ देहि नमः॥ॐ यग्विमनमः॥
ॐ उरु नमः॥ॐ उर्द्धायनमः॥ॐ उर्द्धायनमः॥

ॐ धर्माथनमः॥ॐ अग्ननाथेनमः॥ॐ अवेनाग्नय
नमः॥ॐ अनेग्यथाथनमः॥ पूर्व॥ॐ स्कन्धायनमः॥
ॐ नीलायनमः॥ॐ अकूत्रायनमः॥ॐ यद्रायनमः॥
ॐ यथायनमः॥ॐ कर्गलासनाथनमः॥ॐ कर्पिकाहा
यनमः॥ॐ सिंहायनमः॥ॐ स्वस्मान्नाथनमः॥

येनमः॥ ॥ ध्यान ॥ सुवर्णवर्णदीपाङ्गाणि नयाव
मलासनासिंहासनायमासर्वानंकात्रहविना
वसुहमा महादवीजदारवन्द्यमंदिना नीलायनरुपा
वामदक्षिणवनदायुतं॥ स्वस्त्यवर्माधनावाङ्गवामद
क्षिणयावमागुसर्वत्रक्षणासंपूर्णस्यस्त्वानीयनम

ग्वत्री॥ ॥ निध्यानं॥ ॥ गगनागपतिश्चाङ्गैर्दौ
स्त्वस्त्वानीजगदोग्वत्रीयार्धगीर्हागच्छुर्हागाष्टरस्य
हा॥ २॥ ३॥ याद्यादि॥ द्वादयादि॥ अङ्गैर्दौर्दौर्लौत्रीयार्ध
गीस्त्वस्त्वानीमूर्क्यनमः॥ ३॥ अङ्गैर्दौर्दौर्लौत्रीयार्ध
मावनेका मिनीमिष्टवन्धस्त्वयिनीर्दौर्लौत्रीयार्ध

निदगादिगवायुवागधनिगावंदवधुमंथायिनिस
थामूर्कयस्यस्मानामूर्कयनमः॥ ॥ अवाहनं॥ स्थस्
नामूर्कयनमः॥ दविवनकामिनीमित्रवाचमगायि
नीनमः॥ ऐलाकविनामयेनमः॥ स्थस्मानामूर्कयन
मः॥ ॥ निमन्त्रे॥ ॥ गंकनायत्रुदागीसहिगायनमः॥

ॐ सर्वायलोनासहिगानमः॥ ॐ उयायत्रुत्रपूनीसहिगा
यनमः॥ ॐ कयदिनीरुवानीसहिगायनमः॥ ॐ रुगाय
मदनासहिगायनमः॥ ॐ यिनीकिनीयावर्णासहिगाय
नमः॥ ॐ रुगायउमासहिगायनमः॥ ॐ रुवधुयनसव
मंगलासहिगायनमः॥ ॐ वदुलायनायसहिगदवि

सहिनायनमः॥ॐ कीर्तिवासाय हृदासहिनायनमः॥
ॐ महग्वनाय दवीसहिनायनमः॥ अवाहनादि॥ ॥
ॐ ॐ द्यादिदगताकयातयानमः॥ॐ सर्वयापिनोस्य
स्मानायनमः॥ॐ गममाहंदिनोनमः॥ॐ वा
यनायनमः॥ॐ वायनायनमः॥ॐ नायनीनमः॥

ॐ लयातकामयनमः॥ अवाहनादि॥ ॥ कतसयूना॥
ॐ वद्वलनमः॥ॐ विष्णुवनमः॥ॐ नृदायनमः॥ॐ गं
गायनमः॥ॐ ऊमनायनमः॥ॐ सतस्येनमः॥ॐ ग
उकीनमः॥ॐ कीर्तिकीनमः॥ॐ नाकायनमः॥ॐ न
र्मदायनमः॥ॐ सफसागनयनमः॥ अवाहनादि॥

संस्तुतम् ॥ ॐ मार्कण्डेय नमः ॥ ॐ हनुमान नमः ॥ ॐ लोचन
माय नमः ॥ ॐ वागिन्द्राय नमः ॥ ॐ हनुमान नमः ॥ ॐ यम
दत्त नमः ॥ ॐ विष्णुमित्राय नमः ॥ ॐ सकलविद्या नमः
॥ श्रीवाङ्मय ॥ ॐ नमः ॥ ॥ पूनकतसपूजा ॥
ॐ श्रीदिवादिनवग्रह नमः ॥ ॐ श्रीस्वस्वामादि नमः

चित्रं विद्या नमः ॥ ॐ मृगं उवादि नमः ॥ ॐ विद्या नमः ॥
गवनाय ॥ ॐ महानदी गङ्गादि सहाय संयुक्त नमः
यनमः ॥ ॥ श्रीवाङ्मय ॥ ॥ माहनीय ॥ ॐ माहनीय नमः
हृदयादिनपूजा ॥ ॥ गलसपूजा ॥ ॐ गनय नमः ॥ ॐ
विष्णुगणाय नमः ॥ ॐ प्रकवकाय नमः ॥ ॐ मूखवाताय नमः

महाउं तस्यास्त्यायनमहाउं गगनवक्रायनमहाउं यन
गुरुस्मायनमहाउं सिद्धिविनायकायनमहाउं गं
गमसूनायनमहाउं यार्धगिद्धययनमहाउं उन
यश्चासयिधुगमयनमहाउं मवांचिगसिद्धिप्रमु
यनमहा॥ न्नावाचक्र॥ ॥ गत्रययूरा॥ उं न्रेनकी

यनमहाउं वासुकेनमहाउं कृति कारयेनमहाउं गंश्व
यास्त्यायनमहा॥ ॥ गमयसयूरा॥ उं नन्दायनमहाउं
रुद्रायनमहाउं समनसमनमहाउं गुणित्रायनमहा॥
उं सुररुद्रायनमहाउं उं गमययेनमहाउं यश्चासमा
यनमहा॥ श्रावाचक्र॥ ॥ कोमात्रायूरा॥ उं उं कृत्वा
नमहाउं माहृग्यनमहाउं कोमात्रानमहाउं वषू
वीनमहाउं वागाहीनमहाउं ॐ न्दानीनमहाउं

सप्तम्याय उक्ता कादास जाया

सति श्रीसुतसेवा

आ. ४५

1.270

ASMA ARCHIVES

राम अयेनमः॥ॐ महातस्मीनमः॥ॐ नवदुर्गायेन
मः॥ॐ यत्रागकयनमः॥ॐ गकिरुस्मायनमः॥ॐ
मयूनासनायनमः॥ॐ नकलाचनयनमः॥ॐ काम
नूपायनमः॥ॐ कोमानामूकयनमः॥ नूपायनमः॥
वलिपूजा॥ॐ वृक्षादतद्वृक्षयासायवलिगृह्ण २ स्वाहा
ॐ नकलेगद्वृक्षयासायवलिगृह्ण २ स्वाहा॥ॐ नक

लाचनद्वृक्षयासायवलिगृह्ण २ स्वाहा॥ॐ सुनत्रिंका
द्वृक्षयासायवलिगृह्ण २ स्वाहा॥ॐ चक्रेत्रिंकाद्वृक्षया
सायवलिगृह्ण २ स्वाहा॥ॐ दिगम्बनद्वृक्षयासायवलि
गृह्ण २ स्वाहा॥ॐ सुगुद्वृक्षयासायवलिगृह्ण २ स्वा
हा॥ॐ सुवृक्षद्वृक्षयासायवलिगृह्ण २ स्वाहा॥
ॐ पियागमाहवनीद्वृक्षयासायवलिगृह्ण २ स्वाहा॥ॐ
नयातुवृक्षलादनीद्वृक्षयासायवलिगृह्ण २ स्वाहा॥ॐ

संकाया नाह सिद्धय या ता य व ति ग ट द्र २ स्वाहा ॥ उं ऊं सं ध
त काम नू यि ना द प्र या ता य व ति ग ट द्र २ स्वाहा ॥ उं न न
सि ह ले न वी द प्र या ता य व ति ग ट द्र २ स्वाहा ॥ उं ग न य मि
द प्र वा ता य व ति ग ट द्र २ स्वाहा ॥ उं को मा नी द प्र या ता य
व ति ग ट द्र २ स्वाहा ॥ उं सर्व द प्र या ता य ॐ मा व ति ग ट द्र २
स्वाहा ॥ उं सर्व ह न या सर्व यि ग भ व यो ॐ मा व ति ग ट द्र २

स्वाहा ॥ आ वा द्य ॥ ॥ स्नानं ॥ ॥ हि मां डि गि ख ता ऊ ना
नि र्म तं तु हि मा य म स्नानं सम र्थि गं दु यं पा व ति गि व व
तं ॥ ॥ च न्द न ॥ आ र य पु च न्द न दि यं र वी तं रु ष म न
तं यि यं हि स र्व द य तां च न य मि ग ट द्र २ ॥ ॐ उ म
का ॥ अ ष च वा नि सं स्का यं दि रु सं स्का य मू र्क म न व स र्प
पु सं य र्ण व द्र स र्पं तु ग ट द्र २ ॥ मा ता य र्वा य अ ष

पृथ्यानि संस्कृतं मत्ताया सुमनाह नमम्यदं हि पृथ्वा र्थं
कृतां यत्र मग्यनीया ॥ गोस्नानपठद्याना कवेयपृथ्यानि
सुगन्धवद्रुधकृताया विना निप्रतिष्ठत्वं स्वस्त्वनियु
त्रमग्यनीया ॥ ध्वयं स्नान ॥ कन्यार्यहममसज्ञगसर्वद
वप्रियं कन्यगृह्यतात्वं मासदवीदमनं गवतत्तरेण ॥
इक्ष्वाकुना ॥ इक्ष्वाकुन समाचूकं शृष्टाकनगगं ऊपगुग्यक

गां यत्र मगमनि रुक्मि मृक्किरुतयदं ॥ कर्प्यत्र दायय
कर्प्यत्र क्षात्रसंकासं वृणुणा क्षीतसन्निहं नवपदनमादा
यगृह गां यत्र मग्यनीया रत्नं ॥ रत्नचि विविधाकात्रं कदली
यत्र सादिकं वृक्षपदादि सत्रसंगृह्य गां यत्र मग्यनीया ॥
गवजग्यात ॥ दृग्गीहस्तं कृतामृतं खरयसस्त्राजसयुगं कर्प्य
जादि सत्रमयुक्तं सखायेन निवेदयन् ॥ ॥ वृय ॥ सर्वप्रा

यद्विद्यानन्दायातन्दसूगश्चिद्विधुचितंवायानिरुननद
गायसन्नदविगच्छगोशा ॥ दायाकोकिनूयमिदंदविसे
बेमन्दकुकिदिनंजयावमधनाकलप्रत्येदगावनयामि
क ॥ ॥ नवाद्या ॥ पृथिव्यान्समूहसन्नासर्वथायानिधानिना
नानापकानसंपूकनवद्ययनिगच्छगोशा ॥ दम्भ ॥ इदं
यत्तदवातांनावमुसूग ॥ हितयावर्कननुगंख्यामंस

ननाक्रमदियनशा ॥ विलायप्रपद्मा ॥ असहसस्य
सम्यक्गदकपत्तंततएगपुपंदत्वविल्यस्यगालनसर्व
कामबुदविल्यादात्रिडस्यप ॥ सनविल्ययगायननास्त्रिय
नपुष्यानिगंकतशा ॥ ॥ दधुतस्यानशा ॥ प्रकधपुलकय
यंविस्तस्यधूतयचिद्वं ॥ सधूपायविनिमूकं ॥ गिलाक
मःहयन ॥ ॥ यलस्यान ॥ नकपद्यपदागादिनूकाधि

कला उ वञ्ज कपद्रुपुगनाङ्क (यग म्बदिगु नरु व ७) ॥
निता लुता ॥ स च नू व न दाग म्ब रु तं प्रा प्रा निम न व द त्या नी
ता लु तं य रु न ग रु क्क या विचा त्र न म ग ॥ आ नि पू षा ॥ स द्वा मा
ष ष्वा आ नि ना आ य ॥ य ष्वा ग मा ॥ स्म ॥ ना ॥ आ नि नं ना वि स
वा ग मं गु रु क्क आ नि य ग म्ब रु तं आ नि पू षा य द न न ग म्ब रु तं स
ह मा द न ॥ ॥ दि वा य स न क म्ब वि त्रा य म य क्क ॥ ॥

ॐ स न क्क य न स र्वा स र्थे च म ॥ ॐ आ रु क न नू य न म ॥ ॐ य
ग ग ना य न म ॥ ॐ आ व रु क्क य न म ॥ ॐ य रु क्क य न म ॥ ॐ
वा ल्मी क य न म ॥ ॐ ग न्ना न पा य न म ॥ ॐ ति रु ना य न म ॥ ॐ
गं र्वा य न म ॥ ॐ स व रु क्क य न म ॥ ॐ म वि रु य न म ॥ ॐ नू
व य न म ॥ ॐ ना न दा य न म ॥ ॐ म वि रु ग म य न म ॥ ॐ म
षि पू षा य न म ॥ ॐ दि वा य म य न म ॥ आ वा रु ना दि ता ॥

ॐ श्रेष्ठं वरुणं मा मायुजा ॥ ॐ दिव्यं नृपाय नमः ॥ ॐ दिव्यां वरा
यनमः ॥ ॐ दिव्यां वरुणं मायनमः ॥ ॐ पित्रुणां मयं न
मः ॥ ॐ सुवर्षाय नमः ॥ ॐ अग्निनायनमः ॥ ॐ वैश्वानरायनमः
॥ ॐ अग्निर्वर्षाय नमः ॥ ॐ ब्रह्माय नमः ॥ ॐ अग्निदिवाय
नमः ॥ अवाहनादिपूष्यं ॥ ॥ श्रेष्ठं वरुणं मा मायुजा ॥ ॥

ॐ नननाय नमः ॥ ॐ मातृवत्सलाय नमः ॥ ॐ सुतु न विषाये
नमः ॥ ॐ सुवर्षाय नमः ॥ ॐ सुवर्षाय नमः ॥ ॐ सुहानना
यनमः ॥ ॐ सुमतयनमः ॥ ॐ विषमदायनमः ॥ ॐ ननना
जायते नमः ॥ ॐ पायमूर्क्ये नमः ॥ ॐ ब्रह्मिनायनमः ॥ ॐ
ब्रह्मविष्णवे नमः ॥ ॐ धर्मं दुष्टिं लब्धे नमः ॥ अवाहनादि ॥
दद्यात्तदिति न नृणां वृजा ॥ ॐ उर्वे लब्धे नमः ॥ ॐ मनकाये नमः ॥

यथा गन्धं ज्ञेयं त्रिसंख्यं प्रकृति विजयं विगममाणा विनष्टां दहन् दहन् पलायं
 जटमृकट गितं च वृजमनि ग्रानि ग्रंथा गमुहं कुंहे तं कं वलधुना मे
 सत्रासंग त्रिषूद विस्वैकानिकां द्वा सूरज न सूरव तं वेति नो मिह न कथं
 त्रसूर्यो लभसु गगनं गियमस्तु निचयै यथा दि यो यदूत वृद्धि कस्तु गुम
 द्वा निजाम यो मुग गितस्तु सूर्यजिगा ल्या प्रसन्न द विहं हज न्म निमा
 केदो न कथं ॥ विन्द दव ॥ नमो गिवा यो मित्र कां वन यादि ॥ गयेव
 गंग मयादि ॥ ग्राम स्यं कज यादि ॥ त्रय स्वस्व मा यादि ॥ हन न्यं यादि ॥
 के के के यादि ॥ विद्वानो यादि ॥ ॥ पुंड्रं लव गाने दा तं वेष ह नो गम

अर्थो यं देव दे वे स प ल भ म म ता त कं ग ह ल भ र्च म या द ल्प प्र सी द प त्र मं ॥

नं जाय मा ला धि र्गु लं धार्य नं कुरु लं वन द ह्य क लं ग कि य कं प्रिन पं
 यज्ञां जा या दि म के व ति कुरु मरु तं धू ये दी या दि स र्व त्वा मृ यू ज या स्यं
 नृ ग ल य ह न भ र्थ कुरु वं य वि धा धा ना गाय न त न च व या दि ॥ सिद्धि न
 तु या दि धा र्ज भा वान या दि ॥ कि मा मु नि ॥ त्रय ग म्वा दि ॥ ॥ यति
 धू त का उ वा र व न द्वा य ॥ ॥ वा र व न धू न का उ त्र द्य वि य धू य न ति
 द ये न्ना गि द्वा द ॥ ॥ धू न धू न का उ स र्ग मा ह नी द्वा य ॥ ॥ धू नं ति क्त
 स का या व द्वा स न स न्ना रि ष क या य धा व न स्या न के का य ॥ ॥ वि स
 ऊ न या य ॥ ॥ सा की या य ॥ ॥ न्या स ति का य ॥ ॥ लभ उ ज्जा स्तान त
 वा य ॥ ॥ व ति मा न था स क्ता य ॥ ॥ धू न स क्तान वि ग वि धि धा